अनाग्रह सबसे बड़ा धन है

- आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 20 जनवरी, 2009।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने कहा कि धन का बहुत मूल्य है। व्यक्ति धन से जो चाहता है वह खरीद लेता है, पर यह धन पदार्थ को ही दिला सकता है। आत्मा का धन शांति प्रदान करता है और शांति से व्यक्ति स्थायी सुख को पा सकता है।

पूज्यवर आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने कहा स्थानीय तेरापंथ भवन के श्रीमद मघवा समवसरण में प्रवचन करते हुए कहा कि अनाग्रह सबसे बड़ा धन है। चाहे समाज का क्षेत्र हो धर्म का क्षेत्र हो, या राजनीति का सब जगह जो लड़ाई-झगड़े होते हैं वे आग्रह के कारण होते है। उससे विग्रह पैदा हो जाता है। उन्होंने कहा कि जैनो का सौभाग्य है कि उन्हें अनेकांत जैसा महान दर्शन मिला है। जो दर्शन केवल आकाशी उड़ान भरता है और व्यवहार में नहीं आता है तो वह मात्र बौद्धिक व्यायाम कराने वाला रह जायेगा। अनेकांत का जीवन में उपयोग करने पर 90 प्रतिशत लड़ाई-झगड़े खत्म हो जायेंगे।

आचार्य महाप्रज्ञ ने सापेक्ष, सह अस्तित्व और समन्वय को अनेकांत के भेद बताते हुए कहा कि जो अनेकांत को नहीं समझ सकता वह अहिंसा का विकास नहीं कर सकता। सहअस्तित्व के लिए विरोधि बातों को भी समझना चाहिए।

ईमानदारी सर्वोत्म नीति है

- युवाचार्य महाश्रमण

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि ईमानदारी सर्वोत्म नीति है। ईमानदारी को व्यवहार में उतार कर जीवन को अहिंसामय बनाने का प्रयास होना चाहिए। अहिंसा वह शक्ति है जो आत्मा को निर्मल बना देती है।

युवामनीषि युवाचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि आदमी को सुख प्रिय है तो दूसरों के सुख में बाधक क्यों बनते हैं और उसे दुःख अप्रिय है तो वह दूसरों को दुःख क्यों देता है, इस बात का ख्याल रखें जो अपने लिए नहीं चाहता है वह दूसरों के लिए भी नहीं सोचे और जो अपने लिए चाहता है वही दूसरों के लिए चाहे यह अपेक्षित है।

युवाचार्य श्री ने कहा कि अशुद्ध भाव न आये ये एक उपलब्धि है। इस एक उपलब्धि को प्राप्त करने वाला अनेक उपलब्धियों को प्राप्त कर लेता है। शरीर और वाणी के द्वारा होने वाले अशुद्ध व्यवहार के पीछे मन की भूमिका होती है। अनासक्ति में रमण करने वाला मन मोक्ष तक ले जाने वाला होता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जिसका मन सदा धर्म में रमा रहता है उसको देवता भी नमस्कार करते हैं। व्यक्ति अपनी आकांक्षा की पूर्ति के लिए देवी-देवताओं की शरण में जाता है। पर जिसका स्वयं का पुण्य नहीं होता है उसका देवता भी सहयोग नहीं कर सकते।

- अशोक सियोल

9982903770